शेख़ फ़रीद - सबद ३०
फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥२६॥

सार: कर्मकांडों और बाहरी धार्मिक आचरण का पालन करने वाले व्यक्ति को अक्सर धार्मिक समझ लिया जाता है हालाँकि सच्ची धार्मिकता बाहरी दिखावे या दार्शनिक ज्ञान से नहीं बल्कि हमारी आंतरिक स्थिति से निर्धारित होती है। एक व्यक्ति शारीरिक, सामाजिक या धार्मिक अशुद्धियों से पूरी लगन से बच सकता है फिर भी वह आंतरिक रूप से अहंकार, घमंड या अज्ञानता से कलंकित हो सकता है। आध्यात्मिक स्पष्टता सत्य, विनम्रता, आत्मचिंतन और अहंकार से विमुक्ति के माध्यम से प्राप्त होती है। यदि आंतरिक शुद्धता न हो तब सबसे विनम्र और धर्मिक प्रतीत होने वाले कर्म भी अशुद्ध रह सकते हैं।

फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥
फ़रीद कहते हैं कि वह भ्रमित थे कि उनकी पगड़ी कहीं मैली न हो जाए। यह पवित्रता और अपवित्रता की अवधारणाओं के बीच भ्रम को उजागर करता है।

गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥२६॥
अज्ञानी आत्मा यह नहीं जानती कि अन्त सिर भी धूल से ग्रस्त हो जाता है, यह इस बात का प्रतीक है कि कुछ भी नीचा या ऊँचा नहीं है, अहंकार इस जागरूकता को रोकता है। (२६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद आंतरिक जागरूकता और बाहरी दिखावे के साथ-साथ खुलेपन और कठोरता के बीच अंतर स्पष्ट करते हैं। वह एक ऐसे परिदृश्य का वर्णन करते हैं जहाँ किसी को अपनी पगड़ी के गंदे होने का डर होता है जो एक ऐसी मानसिकता को दर्शाता है जो कथित धर्मनिष्ठा की रक्षा के लिए

बाहरी दिखावे और विचारधाराओं को प्राथमिकता देती है जबकि अपने इरादों की अशुद्धता को नज़रअंदाज़ कर देती है। शेख़ फ़रीद सजगता और विनम्रता के महत्व पर ज़ोर देते हैं क्योंकि शारीरिक और बौद्धिक रूप से सबसे सुंदर, सुसज्जित सिर भी अंततः धूल में मिल जाएगा।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com